लर्निंग लॉस के दौरान

बाल साहित्य से पढ़ना-सीखना

जब स्कूल खुले और स्कूलों में जाकर बच्चों से मिलना हुआ तो यह समझ में आया कि लर्निंग लॉस तो हुआ है लेकिन बाल साहित्य के उपयोग से कुछ हद तक लर्निंग लॉस को कम किया जा सकता है।

फोटो– पुरुषोत्तम

– पारुल बत्रा

पूरे दो साल के लंबे अंतराल के बाद स्कूल खुले थे। दिल में शंका थी कि कैसे स्कूल जाऊंगी? क्या करूंगी? बच्चों से कैसे मिलूंगी? दो साल से ये बच्चे पढ़ने–लिखने की दुनिया से दूर हैं। न जाने उनको अब स्कूल आने में कैसा लगेगा? वह स्कूल का पहला ही दिन था। दिल में ढेर सारी शंकाएं और उत्साह लिए मैं तीसरी कक्षा में गई। ये वही बच्चे थे जिनको मैं पहली में पढ़ाती थी और तब वर्ष 2019 में उनका शाला में यह पहला ही साल था। इसके बाद कोविड की परिस्थितियों के मद्देनजर इन बच्चों ने दो साल तक लगभग घर पर ही पढ़ाई की थी।

शिक्षा विभाग के आदेशानुसार इन बच्चों को डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्रदान की गई थी। चूंकि मैं स्वयं भी इस प्रक्रिया का हिस्सा थी इसलिए यह जानती थी कि इनमें से कई बच्चों की परिस्थितियां ही ऐसी नहीं थी कि वे इस माध्यम से शिक्षा ले पाते। ज्यादातर बच्चे वंचित वर्ग से थे और उनके अभिभावक रोजाना मजदूरी करने या इस तरह के अन्य कार्यों से जुड़े थे। डिजिटल माध्यम से शिक्षा के तहत इन बच्चों को स्मार्टफोन से व्हाट्सएप्प समूह के द्वारा प्रतिदिन होमवर्क और कक्षा कार्य के ऑडियो और वीडियो भेजे जाते थे जिसे देखकर बच्चों को पाठ्यपुस्तक में कार्य करना होता था और अपने कार्य के फोटो या वीडियो शिक्षिका को भेजने होते थे। शिक्षिका भी बच्चों से फोन पर ही संपर्क करती थीं। इन सबमें समस्याएं कई थीं। ज्यादातर बच्चों के अभिभावकों के पास स्मार्टफोन के बजाय बेसिक फोन था जिस पर व्हाट्सएप्प जैसे एप्प नहीं चल सकते थे। अधिकांश बच्चों के अभिभावक सुबह काम पर जाते थे और फोन भी साथ ले जाते थे। जिनके पास फोन होता था उनके पास कई बार इंटरनेट रीचार्ज के लिए पैसे नहीं होते थे। कई बच्चों ने अपने पड़ोसियों के घर या जिनके पास स्मार्टफोन और इंटरनेट था उनके घर समूह बनाकर कक्षा में शामिल

हुए। लेकिन अगर एक ही घर में अलग–अलग कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चे हुए तो समस्या और बढ़ जाती थी क्योंकि फोन तो मुश्किल से एक ही होता था। कई घरों में कक्षा अटेंड करने के लिए लड़कों को लड़कियों से ज्यादा वरीयता दी गई और लड़कियों को घर के काम करने को कहा गया, ऐसे अनुभव भी रहे। बहरहाल, मुझे अब अपना कार्य इस संदर्भ को ध्यान में रखकर करना था।

उस दिन कक्षा में दस बच्चे ही आए थे। मैंने सोचा पहले एक बार यह देख लेते हैं कि इन बच्चों के पढ़ने का स्तर क्या है ? मैंने एक चित्र लिया और और उसके साथ एक वाक्य लिख दिया–

'लड़की झूला झूल रही है'

इस वाक्य को सभी बच्चों को अलग–अलग बुलाकर पढ़वाया–

दस में से पांच बच्चों ने वाक्य को कुछ इस प्रकार पढ़ा–

ल लट्टू का, ड डमरू का उसमें नीचे बिंदी, क कमल का उसमें बड़ी ई की मात्रा झ झंडे का उसमें बड़े ऊ की मात्रा ल लट्टू का उसमें बड़े आ की मात्रा झ झंडे का उसमें बड़े ऊ की मात्रा ल लट्टू का र रस्सी का ह हल का उसमें बड़ी ई की मात्रा ह हल का उसमें अई की मात्रा

इन पांच बच्चों से पूछने पर कि क्या पढ़ा वे कुछ नहीं बता पाए।

बाकी के तीन बच्चों ने वाक्य को कुछ इस तरह पढ़ा–

ल ड़ की झू ला झू ल र ही है

पूछने पर कि वाक्य किसके बारे में है वे भी नहीं बता पाए। बाकी एक बच्ची ने चित्र के नीचे लिखे वाक्य "लड़की झूला झूल रही है" को 'लड़की झूले पर बैठी है ' पढ़ा वहीं एक अन्य बच्ची ने चित्र देखकर 'छोरी झूले ते बैठी है' बोला।

मुझे हैरानी हुई कि मेरी कक्षा के दसों बच्चे पढ़ना नहीं जानते थे। शुरू के पाँच बच्चों को वर्णों और मात्राओं का ज्ञान तो था लेकिन वे वाक्य का अर्थ नहीं बता पा रहे थे और हिज्जे करने पर ही अटके हुए थे बाकी के तीन बच्चे हिज्जे तो नहीं कर रहे थे लेकिन एक–एक वर्ण अलग–अलग पढ़ने के कारण वाक्य का अर्थ वे भी नहीं बता पा रहे थे। यानी वे वर्णों का उच्चारण भर कर रहे थे। बाकी एक ने तो चित्र देखकर अंदाजा भर लगाया था और एक ने अपनी भाषा में चित्र देखकर जो समझा वह बताया था। यानी तीसरी कक्षा के यह सभी बच्चे पढ़कर समझने के कौशल को अभी हासिल नहीं कर पाए थे जबकि कक्षा तीन में आते–आते बच्चों को उनके स्तर का टेक्स्ट धाराप्रवाह पढ़ना आ जाना चाहिए। जब मैंने इसी तरह बच्चों के लेखन स्तर को देखा तो पाया कि बच्चे इस वाक्य को बोर्ड से देखकर नकल तो उतार लेते हैं लेकिन क्या लिखा पढ़कर सुनाने को कहने पर सुना नहीं पाते, इसी तरह मन से कुछ शब्द या वाक्य भी नहीं लिख पा रहे हैं। इसका मुख्य कारण कक्षा एक में सिर्फ वर्णों और मात्राओं पर ही काम होना और उसके बाद नियमित रूप से शाला न आ पाना रहा। चूंकि इस समय मेरे पास पाठय पुस्तक से पढ़ाने की बाध्यता नहीं थी इसलिए मैंने तय किया कि मैं शाला पुस्तकालय का इस्तेमाल करूंगी और बाल साहित्य के द्वारा इनके पढ़ने–लिखने की दक्षताओं पर काम करूंगी। चूंकि ये बच्चे उम्र में तो बड़े हो चुके थे और इनमें से सभी की उम्र आठ से नौ साल के करीब थी इसलिए इनके उम्र और अनुभव को ध्यान में रखते हुए मैंने चार कविताओं और दो कहानियों का चयन किया। इनमें दो कविताएं एकलव्य संस्था के कविता पोस्टर में से थीं जिनमें से एक थी– 'लालाजी लड्डू दो' और दूसरी थी 'बंदर मामा पहन पजामा,' तीसरी 'वह देखो वह आता चूहा' और चौथी 'तोती' थी। कहानियों में प्रथम से प्रकाशित बिग बुक 'मोटा राजा दुबला कुत्ता' और रूम टू रीड से प्रकाशित बिग बुक 'चुहिया और चिड़िया' थी।

पहले दिन मैंने बंदर मामा कविता के साथ काम करना तय किया। कविता के पोस्टर को सामने रखकर कविता दो–तीन बार पढ़ी और फिर बच्चों के साथ मिलकर कविता को गाया। जहां इतराए शब्द आता था वहां बच्चे अकड़ कर चलने का अभिनय करते थे। कविता थोड़ी बड़ी थी इसलिए वे बार–बार कुछ लाइन भूल रहे थे इसलिए शुरुआत की चार लाइनों को बोर्ड पर लिखकर चार–पांच बार पढ़ा। मुझे लगा वर्णों और अक्षरों पर ध्यान दिलाने के लिए शुरुआती चार पंक्तियों पर काम करना ठीक रहेगा।

बंदर मामा पहन पजामा
दावत खाने आए
पीली टोपी कुरता जूता
पहन बहुत इतराए

पंक्तियों का मोटा अंदाजा बच्चे लगा पा रहे थे। फिर बंदर शब्द को बोर्ड पर लिखकर पढ़ा और बच्चों को बंदर का चित्र बनाकर साथ में बंदर लिखने को कहा जो बोर्ड पर लिखा हुआ था। बच्चों को चित्र में बंदर के साथ अपना नाम भी हिंदी में लिखने को कहा। जो अपना नाम नहीं

लिख पा रहे थे उनका नाम मैंने लिख दिया और देखकर लिखने को कहा।

इस तरह सभी बच्चों ने बंदर का चित्र बनाकर अपना नाम लिखा।

इसके बाद बच्चों से ब से शुरू होने वाले शब्द बताने को कहा। कुछ बच्चे बीच में शेर, भालू और हाथी जैसे शब्द या जो भी मन में आए बोल रहे थे। बोर्ड पर 'ब' से शुरू होने वाले शब्दों का एक शब्द जाल बनाया। बच्चों को सारे शब्द उंगली रखकर पढ़वाए। कौन–सा शब्द किसने बताया यह भी पूछा सारे बच्चों ने लगभग सही ही बताया। बच्चों को ब से शुरू होने वाले ये शब्द कई बार पढ़वाए, कौन–सा शब्द किसका है? यानी किस बच्चे ने बताया है पूछा। फिर अपना शब्द सबने आकर बताया। ये सभी शब्द उन्हें लिखने को दिए।

दूसरे दिन फिर बंदर मामा कविता को दोहराने से बात शुरू हुई अब बच्चों को ये चार लाइन अच्छे से याद हो गई थीं। आज बच्चे यह भी बता पाए कि कौन–सी लाइन कहां लिखी है। फिर मैंने कुछ शब्दों की तरफ इशारा करते हुए पूछना शुरू किया कि यह कौन–सा शब्द है? कविता की पंक्तियों के कुछ शब्द जैसे– बंदर मामा पहन पजामा, इसमें पहन कहां है, पजामा कहां है भी अंदाज से बता पाए।

इसके साथ ही मैंने 'ब' से शुरू होने वाले शब्द जो बच्चों ने परसों बताये थे और उनका शब्द जाल बनाया था, पर भी बात की और पूछा कि आप लोगों ने कौन–कौन से शब्द बताये तो मुझे बड़ी हैरानी हुई कि सभी शब्द बच्चों ने वापिस बता दिए। मुख्य रूप से अपना–अपना शब्द सभी को याद था। जब मैंने मोबाइल से खींची फोटो से मिलाया तो सभी शब्द वापिस बोर्ड पर आ चुके थे। आज उन शब्दों को फिर से पढ़वाया और कुछ बच्चों को बुलाकर कौन–सा शब्द कहां लिखा है पूछा तो कुछ बच्चे सही तो कुछ गलत बता रहे थे।

इसके बाद कविता में आए 'ब' और 'प' अक्षर से शुरू होने वाले शब्दों को पहचानने को कहा तो बच्चों ने बता दिया कि पहन दो बार, पजामा और पीला में भी 'प' आया है।

बंदर मामा पहन पजामा
दावत खाने आए
पीली टोपी कुरता जूता
पहन बहुत इतराए

फिर बच्चों से कहा कि 'प' से शुरू होने वाले शब्द बताओ, शुरू में तो कुछ 'प' से और कुछ दूसरे वर्णों से

शुरू होने वाले शब्द भी बच्चे बताते रहे जैसे मम्मी के साथ पापा भी बोल रहे थे। लेकिन कुछ देर बाद सिर्फ 'प' से शुरू होने वाले शब्द ही आने लगे। 'प' का शब्द जाल बनवाने के बाद और उन सभी शब्दों को दो–तीन बार पढ़वाने के बाद, बच्चों के बताए शब्दों में से ही 'प' और पा (।) की मात्रा के शब्दों को छांटकर दो टेबल में बांट दिया गया, और उनके बोलने में फर्क करवाते हुए पढ़ा गया। बच्चों ने जल्दी ही इस बात को पकड़ लिया और फिर जब एक–एक बच्चे को बुलाकर कोई शब्द पूछा जा रहा था तो अधिकांश बच्चे बता पा रहे थे कि पंजा किस तरफ लिखा है और पास्ता किस तरफ है। फिर ये शब्द उन्हें लिखने को दिए गए और 'प' और पा वाले शब्दों पर गोला लगाने को कहा गया। आज दूसरे दिन के अंत तक 'ब' और 'प' वर्ण की पहचान, कुछ शब्दों पर काम और 'आ' की मात्रा पर शुरुआती काम हो चुका था।

इसके बाद वाले हफ्ते में मैंने बंदर मामा कविता के एक–एक वाक्य को पट्टियों में लिखकर काट लिया यानी उसकी वाक्य पट्टियां बना लीं। ऐसे तीन सेट मेरे पास थे, मैंने सोचा कि आज समूह में बच्चों से कविता का चार्ट देखकर कविता की वाक्य पट्टियां जमवाने का कार्य करूंगी। मैंने बच्चों के चार समूह बना दिए और हर समूह

को वाक्य पट्टियों का एक–एक सेट दे दिया। बच्चे चार्ट पर लगी कविता देखकर उन्हें जमा रहे थे साथ ही पढ़ भी रहे थे, समूह में जो बच्चे थोड़ा पढ़ पा रहे थे वे अनुमान लगाने में अपने अन्य साथियों की मदद भी कर रहे थे। समूह कार्य के बाद मैंने कविता की पट्टियों को आपस में मिलाकर उन्हें पूरी कक्षा में बांट दिया और बच्चों से कहा कि मैं कविता को गाना शुरू कर रही हूं और मैं जो पंक्ति गाऊं उसके अनुसार वे अपनी वाक्य पट्टियों को लेकर आते जाएँ। इस तरह हमने कविता के क्रम और समझ पर काम किया इसे मैंने दो–तीन दिन तक जारी रखा जब तक सभी बच्चे वाक्यों से परिचित नहीं हो गए।

अगले तीन दिनों में मैंने सभी बच्चों से कविता के शब्द कार्डों को जोड़कर कविता के वाक्यों को पूरा करवाया। यह कार्य हर बच्चे के साथ व्यक्तिगत तौर पर किया गया ताकि हर बच्चा शब्दों को पढ़ते हुए पूरा वाक्य बना पाए, कुछ बच्चे खुद कविता का चार्ट देखकर शब्द मिला पाते थे और कई की मैं सहायता करती थी। इस बीच पूरी कविता को गाना और साथ में पढ़ना यह भी चलता रहा। इसी बीच हम कविता में आए अन्य कई वर्णों जैसे बंदर का 'ब', मामा का 'म', पजामे का 'प' आदि पर शब्द जाल बनाने के माध्यम से काम कर चुके थे और इन सभी वर्णों से बने शब्द जाल को कक्षा की दीवारों पर भी लगा चुके थे। तकरीबन 10 दिन बाद अब बच्चे बंदर मामा पहन पजामा कविता को अंदाज से पढ़ पा रहे थे और उसमें से कुछ वर्ण और शब्दों को भी पहचान पा रहे थे।

कविता के बाद मैंने प्रथम से प्रकाशित बिग बुक 'मोटा राजा दुबला कुत्ता' की कहानी पर काम करना तय किया। यह एक बड़ी सी किताब है और इसके हर पेज पर केवल एक–एक लाइन ही लिखी हुई है। पहले बच्चों को कहानी सुनाई और कहानी पर चर्चा की। इसके मुख्य कवर को लेकर मजेदार बातें हुई जैसे कहानी का नाम है मोटा राजा लेकिन यहां राजा दिख रहा है पतला। कहानी सुनाने के बाद मैंने बच्चों को मोटा राजा दुबले कुत्ते का चित्र बनाने को कहा, शुरू में तो बच्चे हिचकिचाते रहे और पाठयपुस्तक में ढूंढने लगे कि कहीं से देखकर राजा और कुत्ते का चित्र बना सकें। फिर मैंने उन्हें अपने मन से चित्र बनाने को कहा। सभी बच्चों को चित्र में बोर्ड पर से देखकर 'मोटा राजा और दुबला कुत्ता' की लेबलिंग करने को कहा साथ अपना नाम, कक्षा और स्कूल का नाम लिखने को कहा। इसका एक फॉर्मेट मैंने बोर्ड पर भी बना दिया। जो बच्चे नहीं लिख पा रहे थे उनको कॉपी में

लिखकर दिया और देखकर लिखने को कहा।

अगले दो दिनों में हमने इसी कहानी को चार्ट पर से देखकर पढ़ा और बोर्ड पर लिखा और हर बच्चे को बुला कर बार–बार उंगली रखकर पूरी कहानी पढ़वाई गई। साथ ही मोटा का 'म', राजा का 'र', दुबला का 'द' और कुत्ता का क इन पर बातचीत करते हुए इन सभी वर्णों के शब्द जाल बनाए, बच्चों के साथ बार–बार कहानी पढ़ते समय बच्चों से मोटा, कुत्ता, राजा, चिड़िया आदि कहां–कहां लिखा है पूछा गया। इस तरह इस कहानी के साथ बच्चों ने कुछ नए वर्णों और शब्दों को पहचानना सीखा। चूंकि इस कहानी में टेक्स्ट बेहद कम था और हर पृष्ठ पर केवल एक–एक लाइन ही दी गई थी इसलिए मैंने इस कहानी के साथ भी शब्द कार्ड और वाक्य पट्टी बनाकर उन्हें जमवाने का कार्य व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर किया।

इसी तरह मैंने बाकी की दो कविताओं लालाजी लड्डू दो, वह देखो वह आता चूहा और कहानी चुहिया और चिड़िया पर भी काम किया। सभी पर काम करने की प्रक्रिया लगभग यही रही। कविताओं पर शब्द और वाक्य पट्टी के माध्यम से कार्य किया गया और कहानियों और कविताओं दोनों के चार्ट कक्षा में लगाए गए। साथ ही यह भी कोशिश रही कि जिन वर्णों पर काम हो रहा है उन सबके शब्द जाल कक्षा में लगा दिए जाएं साथ ही नए शब्दों को कक्षा के कोने में बनी शब्द दीवार पर जगह मिलती जाए। हर रोज कक्षा की शुरुआत करने से पहले हम कविताओं को दोहराते या फिर प्रार्थना के बाद उन्हें गाते और एक

बार सारे शब्द जाल पढ़ लेते। उसके बाद ही हम अपनी कक्षा की नियमित शुरुआत करते। हमने कविता कहानियों से जुड़े चित्र भी बनाए और सभी पात्रों के नाम लिखे। तीन महीने के अंदर मैंने कक्षा में काफी बदलाव देखे जैसे–

- कक्षा में कम उपस्थित रहने वाले बच्चे अब नियमित आने लगे थे, उनकी कक्षा में सहभागिता भी बढ़ी थी।
- शब्द जाल के माध्यम से बिलकुल न पढ़ पाने वाले बच्चों ने कुछ शब्दों की पहचान और कुछ वर्णों को पहचानना सीख लिया था। हर कविता–कहानी में वे कुछ शब्द और कुछ वर्ण पहचान पा रहे थे।
- कक्षा में लगातार पूरे शब्द को पढ़ने और मेरे द्वारा हिज्जे न करवाने से बच्चे अब शब्द को पढ़ने का प्रयास करते थे।
- जो बच्चे शब्द पढ़ पा रहे थे उनके पढ़ने का प्रवाह भी कुछ बेहतर हुआ था और वे नए शब्द पढ़ना और अनुमान लगाकर पूरी कविता पढ़ने की ओर अग्रसर हो रहे थे।
- कहानी और कविताओं पर बात करने से बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति भी बेहतर हुई थी। उदाहरण के लिए मोटा राजा दुबला कुत्ता कहानी को पढ़ने के बाद काफी चर्चा हुई कि हम मोटे से दुबले या दुबले से मोटे कैसे हो जाते हैं और इसके लिए क्या–क्या करना या नहीं करना होता है।
- चित्र बनाने से वे अब कविता–कहानी से हटकर क्या बनाया जा सकता है भी सोचने लगे थे और देखकर चित्र बनाने या नकल करने की आदत कुछ कम हुई थी।
- कक्षा की दीवारों पर कुछ न कुछ लगा रहने से जब भी उनका मन करता था वे खुद से पढ़ते थे और अपने साथियों को बताते थे कि देखो इस चार्ट में मेरा बताया हुआ शब्द यहां लिखा है।

इस पूरी प्रक्रिया के बाद मेरी यह समझ बनी कि इस दौरान पाठ्यपुस्तक से पढ़ाने की बाध्यता न होने पर मैं ज्यादा बेहतर तरीके से बच्चों के साथ बाल साहित्य को लेकर काम कर पाई और उनके लर्निंग लॉस की स्थिति को देखते हुए उन्हें बेहतर तरीके से एंगेज कर पाई।

(लेखिका अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन भोपाल मध्य प्रदेश से जुड़ी हैं)

शिक्षक सृजन

चींटी

दिखाई देती तिल सी छोटी,
पर मोल है इसकी बेहद मोटी।
हमेशा कतार में ही चलकर
अनुशासन हमें सिखाती।
लघु पद से मीलों चलकर
मेहनत करने की सीख देती।
हमेशा समूह में रहकर
एकता में बल यह शिक्षा देती।
नन्ही सी जान शत्रु से लड़कर
आत्मरक्षा करना सिखाती।
बिना रुके, बिना थके आगे बढ़कर
कभी न माने हार यह सीख देती।
बिन टाले अथक-कार्य कर
सतत प्रयास करें यह शिक्षा देती।

काला बादल

मैं तो हूँ काला
जिसे देख हर कोई हो जाता मतवाला।
किसान के होठों पर देकर मुस्कान
कर देता हूं उनके पूरे अरमान।
धरती माता की प्यास बुझाने
आ जाते हो रिमझिम बरसा।
मोर भी बैठे रहते पंख फैलाकर
झूम उठते काले बादल देखकर।
बच्चों के आनंद का क्या कहना
कागज की नाव बन जाती गहना।
ओ काले बादल जल्दी आ जाना
सारे जग को हरा-भरा बना देना।

– पदमिनी साहू
गवर्नमेंट इंग्लिश मीडियम स्कूल बलोदा बाजार, रायपुर, छत्तीसगढ़